प्रकाशनार्थ।

01 अक्टूबर,2023 गोरखपुर।

युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज की 54 वीं तथा राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज की 9वीं पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित साप्ताहिक श्रीमद्भागवत कथा के छठे दिन व्यासपीठ से कथाव्यास वृंदावन मथुरा से पधारे भागवत भास्कर श्री कृष्णचंद्र शास्त्री "ठाकुर जी" ने कहा कि दुनिया का सबसे छोटा परमाणु यदि कोई है तो वह श्री कृष्ण है और दुनिया का सबसे विराट यदि कोई है तो वह भी श्री कृष्ण है । वेदव्यास ने भगवान् को "अणोरणीयान् महतो महीयान्" कहा है। भगवान् सर्वव्यापक है और अपरिमित है।

कलिमर्दन की कथा सुनाते हुए कथा व्यास ने कहा कि यमुना ही भक्ति है, सरयू ही वैराग्य है और गंगा ही ज्ञान है इसलिए श्रीधाम वृंदावन भक्ति की भूमि है, वहां भक्ति नृत्य करती है। अयोध्या वैराग्य की भूमि है तथा काशी ज्ञान की भूमि है, तथा इन तीनों की भूमि यदि कोई है तो वह है गोरखपुर है। यहां गोरखनाथ जी, हनुमान प्रसाद पोद्दार जी, और राधा बाबा ने क्रमशः गोरखपुर को वैराग्य, ज्ञान और भक्ति की भूमि बनाया । कभी बंद कमरे में यदि भगवान का भजन करते समय हमारे आंख से यदि भगवान के लिए आंसू निकलते हो तो इससे बड़ी कोई भक्ति नहीं । उन्होंने कहा कि भक्ति में पाखंड का प्रवेश नहीं होना चाहिए। यमुना रूपी भक्ति में काली नाग रूपी पाखंड का प्रवेश हो जाने से भगवान् दुखी होते हैं और अपने पैरों से उसका मर्दन करते हैं ।

गोपी शब्द का अर्थ बताते हुए कहा कि जो गो अर्थात इंद्रियों से श्रीकृष्ण को "पी" अर्थात पीती है वही गोपी कही जाती है !गोपिया हर क्षण कृष्ण के याद में खोई रहती थी , उन्हें हर क्षण कृष्ण के साथ रहने का अनुभव होता रहता था।

गोपियों के वस्त्र हरण के प्रसंग को स्पष्ट करते हुए कहा कि श्रीकृष्ण रूपी ईश्वर ने गोपियों रूपी जीव के वस्त्र रूपी अविद्या के आवरण का हरण कर उन्हें परमात्मा के भाव का दर्शन कराया था ।इसे अन्यथा नहीं समझना चाहिए ।

उन्होंने कहा कि श्रीमद् भागवत महापुराण श्रीमद् भगवत् गीता का भाष्य है। गीता सूत्र रूप में कही गई है जिसे विस्तार से भागवत में लिखा गया है। बिना गीता के अध्ययन के भागवत के विषय में बोलना या समझना कठिन है। गीता में भगवान ने कहा है कि मैं सबके हृदय में वास करता हूं , लेकिन अविद्या का आवरण उसके ऊपर होने के कारण वह दिखता नहीं है। जैसे पारसमणि को कपड़े में लपेटकर लोहे की डिब्बी में रखने पर वह लोहे की डिब्बी सोना नहीं बनती, वैसे ही परमात्मा का जीव को दर्शन नहीं होता। कथा व्यास ने कहा कि भगवान राम ने जो

किया है उसे अपने जीवन में करना चाहिए परंतु श्री कृष्ण ने जो किया है उसे करना नहीं चाहिए अपितु जो कहा है उसे करना चाहिए। कृष्ण की प्रारंभिक अवस्था की जो लीलाएं हैं उसे कर पाना मनुष्य के सामर्थ्य में नहीं है।

जीव का जन्म कर्म से होता है और जीव की मृत्यु भी कर्म से ही होती है तथा जीवन में जो कुछ प्राप्त होता है वह भी कर्म से ही प्राप्त होता है। कर्महीन व्यक्ति को ईश्वर भी कुछ फल नहीं देते है।

श्री कृष्ण ने कर्म करने का उपदेश गोकुल वासियों को दिया और कहा कि सभी लोग गिरिराज गोवर्धन पर्वत की पूजा करिए। गिरिराज गोवर्धन प्रत्यक्ष देव है,इनकी हरियाली से ही वर्षा होती है । इंद्र के रुष्ट होकर वर्षा करने पर भगवान ने अपने उंगली पर साथ कोश के गोवर्धन को 7 दिन तथा 7 रात तक उठाये रखा। जीवन में 7 संख्या का बड़ा महत्व है । इसलिए 7 दिन की भागवत कथा सुनते हैं जिससे जीवन में आने वाले सातों दिन अच्छे बीतते हैं।

उन्होंने गोस्वामी बिन्दु जी के भजन " मेरा दिल तो प्यारा है पर तू उससे भी प्यारा है" गाकर श्रोताओं को भावविभोर कर दिया।